प्राकृतिक खेतीः भारतीय कृषि में क्रांति

कृषि कुंभ (फरवरी, 2023),
खण्ड 02 भाग 09, पृष्ठ संख्या 54–56

प्राकृतिक खेतीः भारतीय कृषि में क्रांति

हर्षित मिश्रा[1] डॉ. सुप्रिया[2] एवं आदित्य भूषन श्रीवास्तव [3]

[1]शोध छात्र, [2]सहायक प्राध्यापक, [3]शोध छात्र, कृषि अर्थशास्त्र
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश भारत

Email Id: wehars@gmail.com

प्राकृतिक खेती कृषि का एक तरीका है जो सिंथेटिक इनपुट के बजाय प्राकृतिक प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है। भारत में, इसने फसल की पैदावार बढ़ाने और कृषि के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के तरीके के रूप में लोकप्रियता हासिल की है।

हालाँकि, ऐसी कई चुनौतियाँ हैं जिनका भारत में प्राकृतिक किसानों को सीमित बाजार, आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक स्रोतों की कमी और जलवायु परिवर्तन के कारण पैदावार में गिरावट जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। नतीजतन, इन चुनौतियों की सूक्ष्म परिप्रेक्ष्य से जांच करना और प्राकृतिक खेती को एक खाद्य उत्पादन पद्धति के रूप में बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है जो पर्यावरण के अनुकूल है और भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता नहीं करता है।

प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती कृषि का एक तरीका है जो एक संतुलित और आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की कोशिश करता है जिसमें सिंथेटिक रसायनों या आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों के उपयोग के बिना फसलो का उत्पादन किया जा सकता हैं। कृत्रिम उर्वरकों और कीटनाशकों जैसे कृत्रिम स्रोतों पर निर्भर रहने के बजाय, प्राकृतिक किसान मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाने और फसल के विकास को समर्थन देने के लिए फसल चक्र, अंतर–फसली और कंपोस्टिंग जैसी तकनीकों पर भरोसा करते हैं।

प्राकृतिक खेती के तरीके अक्सर पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं पर आधारित होते हैं और इन्हें स्थानीय परिस्थितियों और संसाधनों के अनुकूल बनाया जा सकता है। प्राकृतिक खेती का लक्ष्य एक तरह से स्वस्थ, पौष्टिक भोजन का उत्पादन करना है जो टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल हो।

प्राकृतिक खेती का महत्व

- **खाद्य और पोषण सुरक्षाः** प्राकृतिक खेती भारत में समुदायों के लिए खाद्य सुरक्षा में सुधार करने में मदद कर सकती है, विशेष रूप से छोटे स्तर के किसानों के लिए, जिनके पास आधुनिक उपकरण तक नहीं है या वह खर्च करने में सक्षम नहीं हैं। प्राकृतिक तकनीकों पर भरोसा करके किसान उच्च लागत खर्च किए बिना स्वस्थ, पौष्टिक भोजन का उत्पादन कर सकते हैं।

- **पर्यावरणीय लाभः** प्राकृतिक खेती के कई सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव हो सकते हैं, जैसे जल प्रदूषण को कम करना, मिट्टी का क्षरण और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन। यह विभिन्न प्रकार की फसलों और अन्य पौधों के विकास का समर्थन करके जैव विविधता को संरक्षित करने में भी मदद कर सकता है।
- **सतत कृषिः** प्राकृतिक खेती कृषि के लिए एक स्थायी दृष्टिकोण है जो प्राकृतिक संसाधनों को कम करने के बजाय उन्हें संरक्षित और बढ़ाने का प्रयास करती है। यह भारत जैसे देश में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है, जहां जनसंख्या लगातार बढ़ रही है और प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है।
- **आर्थिक लाभः** प्राकृतिक खेती लागत में कमी, कम जोखिम, समान उपज, अंतर–फसली से आय के कारण किसानों की शुद्ध आय में वृद्धि करके खेती को व्यवहार्य और आकांक्षी बना सकती है।

प्राकृतिक खेती से जुड़े मुद्दे

- **मौसम और जलवायुः** प्राकृतिक खेती के तरीके मौसम और जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं, क्योंकि वे फसल वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए कृत्रिम रसायनों पर निर्भर नहीं होते हैं। यह भारत में किसानों के लिए एक चुनौती हो सकती है, जहां जलवायु अप्रत्याशित रहती है।
- **कीट और रोग का खतराः** पारंपरिक किसानों की तुलना में प्राकृतिक किसानों को कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करने में अधिक कठिनाई हो सकती है, जो इन समस्याओं के इलाज के लिए कृत्रिम रसायनों का उपयोग कर सकते हैं। यह प्राकृतिक खेती को अधिक जोखिम भरा और चुनौतीपूर्ण बना सकता है। उदाहरण के लिए, एक प्राकृतिक किसान कीटनाशकों के उपयोग के बिना कीट संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष कर सकता है, जिससे फसल की हानि और वित्तीय कठिनाई हो सकती है।
- **सीमित संसाधन और समय की पाबंदीः** पारंपरिक खेती के तरीकों की तुलना में प्राकृतिक खेती में अक्सर अधिक श्रम और अन्य संसाधनों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक किसानों को कंपोस्टिंग, फसल चक्र और अंतर–फसली जैसे कार्यों पर अधिक समय और प्रयास करने की आवश्यकता हो सकती है। यह भारत में किसानों के लिए एक चुनौती हो सकती है जो पहले से ही कमजोर हैं और उनके पास इन कार्यों को करने के लिए समय या जनशक्ति आसानी से नहीं हो सकती है।

भारत में खेती से जुड़ी अन्य चुनौतियाँ

- **सिंचाई सुविधा का अभावः** राष्ट्रीय स्तर पर, भारत के सकल फसली क्षेत्र का केवल 52% सिंचित है। आजादी के बाद से भारत ने तेजी से प्रगति की है, इसके बावजूद मॉनसून ने फसल रोपण को प्रतिबंधित करना जारी रखा है।

- **कृषि विविधीकरण का अभावः** भारत में कृषि के तेजी से व्यावसायीकरण के बावजूद, अधिकांश किसान मानते हैं कि अनाज हमेशा उनकी मुख्य फसल होगी (अनाज के पक्ष में न्यूनतम समर्थन मूल्य कम होने के कारण) और फसल विविधीकरण की उपेक्षा करते हैं।

सतत कृषि से संबंधित हालिया सरकारी पहल

- पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए जैविक मूल्य श्रृंखला विकास मिशन
- सतत कृषि पर राष्ट्रीय मिशन
- परम्परागत कृषि विकास योजना
- कृषि वानिकी पर उप–मिशन
- राष्ट्रीय कृषि विकास योजना

प्राकृतिक खेती से जुड़े कुछ सुझाव

- **किसान प्रशिक्षण केंद्रः** भारत में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने का एक तरीका यह होगा कि किसानों को प्राकृतिक खेती की तकनीकों और इस दृष्टिकोण के लाभों के बारे में शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। यह विस्तार कार्यक्रमों और स्थानीय स्तर पर किसान प्रशिक्षण केंद्र बनाकर किया जा सकता है।
- **प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहनः** सरकार प्राकृतिक तरीकों को अपनाने वाले किसानों को अनुदान या सब्सिडी जैसे वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करके भारत में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में भूमिका निभा सकती है। सरकार प्राकृतिक कृषि तकनीकों के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए नियम या मानक भी स्थापित कर सकती है।
- **सीएसआर के साथ प्राकृतिक खेती को जोड़नाः** निजी क्षेत्र कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी कार्यक्रम, प्राकृतिक कृषि परियोजनाओं में निवेश और प्राकृतिक कृषि संगठनों के साथ साझेदारी जैसी पहलों के माध्यम से भारत में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।
- **एक जिला एक प्राकृतिक उत्पाद मेलाः** किसानों के बाजार और समुदाय समर्थित कृषि कार्यक्रमों जैसे स्थानीय और टिकाऊ खाद्य प्रणालियों के विकास को प्रोत्साहित करने से प्राकृतिक रूप से उगाए गए उत्पादों की मांग पैदा करके भारत में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है। साथ ही प्राकृतिक कृषि उत्पादों को बढ़ावा देने और अपने आप में एक ब्रांड बनाने के लिए राज्य स्तर पर एक जिला एक प्राकृतिक उत्पाद मेला आयोजित किया जा सकता है।
- **अनुसंधान और विकासः** प्राकृतिक कृषि तकनीकों में सुधार और उनकी प्रभावशीलता को प्रदर्शित करने के लिए अनुसंधान और विकास में निवेश करने से भारत में प्राकृतिक खेती को अपनाने में वृद्धि करने में मदद मिल सकती है। इसमें उपयोग करने के लिए सर्वोत्तम प्राकृतिक उर्वरकों, सबसे प्रभावी कीट नियंत्रण विधियों और सबसे अधिक उत्पादक फसल रोटेशन जैसे विषयों पर शोध शामिल हो सकता है।